कालमार्क्स एव महात्मागाँधी के विचारो का विश्लेष्णात्मतक अध्यन

डा0 जोगिन्द्र सिंह,
विभाग : राजनीति विज्ञान,
गाँव – भगवतीपुर (रोहतक)

शोध–सार

कार्लमार्क्स और महात्मागाँधी दोनों सामाजिक परिवर्तन के कट्टर समर्थक थे। दोनों के सिद्धांत अपने–अपने देशों के राष्ट्रीय संघर्षों के परिपेक्ष्यमें विकसित हुए। दोनों के दर्शन का उद्देश्य राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक क्रांतिलाने का था। दोनोंने ना सिर्फ व्यापक एवं गहन सिद्धांतों का प्रतिपादन किया। दोनोंने पूंजीवादी,सामंतवाद,साम्राज्यवाद,उपनिवेशवाद के विरूद्ध व्यापक जन समूह को एक जुट कर निरंतर संघर्ष किया। फलतःसामाजिकपरिवर्तनकेप्रभावोत्पानसाधनों के विकास में उन्हेंकाफी सहायता मिली, जिससे वह अपने–अपने देश में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सके। इन समानताओं के बावजूद भी उनके विचारों में कुछ असमानताएँ हैं। मार्क्स की भौतिक समाजवादी(वैज्ञानिकसमाजवाद)विचारधारा है जबकि महात्मागांधी की आध्यात्मिक समाजवादी विचारधाराहै। ये दोनों विचारधाराएं एक–दूसरेसेपूर्णतःविपरित हैं। एक तरफ पश्चिम की भौतिकवादी विचारधारा पदार्थको ही सब कुछ समझतीहै। जबकि दूसरी तरफ गांधीजी की आदर्शवादी विचारधारा आत्माको सभी कुछ मानतीहै।

मूलशब्दः–समाजवाद,सामाजिकव्यवस्था, शोषक एवंशोषित,साधनएवंसाध्य,अध्यात्मिक,पूंजीपति।

मार्क्सकेभौतिकवादीसिद्धान्तकेअनुसारविश्वजगतकेसभीक्रियाकलापआर्थिकतत्वोंसेहीप्रभावितहोते हैं।दूसरेशब्दोंमेंभौतिकजगतमेंसमाजकीउत्पादनकीपद्धतिसामाजिक,राजनीतिकतथाआध्यात्मिकजीवनक्रमको भीनिश्चित्करतीहै।मार्क्सकीइसव्याख्यासेस्पष्टहैकिमार्क्सपदार्थकोनिर्णायकमानताहैउनकेअनुसारमनुष्य कीचेतनाभौतिकपरिस्थितियोंकोप्रभावितनहींकरतीअपितु,उनकीभौतिकपरिस्थितियाँहीउनकीचेतनाकोप्रभावित करतीहैं।

दूसरीतरफगांधीजीइतिहासकीआर्थिकव्याख्याकोपूर्णतःअस्वीकारकरतेहैंऔरलिखतेहैं''मैंइससेसहमत नहींहूँकिहमारादृष्टिकोणआचारशास्त्रीयमानदण्ड़औरमूल्यपूर्णतयाहमारेभौतिकपरिवेशकीउपजहै।''[1]गांधीजी कीइतिहाससंबंधीव्याख्याउनकेआध्यात्मिकदर्शन,सत्यकीधारणा,अहिंसाऔरईश्वरमेंदृढ़विश्वासकाविस्तारमात्र है।गांधीजीकासमाजवादीदर्शनप्रगतिशीलअहिंसावादीकहलाताहैतथाइतिहाससम्बन्धीउनकीव्याख्याकोविशुद्ध आध्यात्मिकव्याख्याकहाजासकताहै।[2]मानवइतिहासमेंअहिंसाकेउत्तरोत्तरविकासकीव्याख्याकरतेहुएवेलिखते हैंकिमानवअपनेआरम्भिककालसेलेकरअबतकतीव्रतासेअहिंसाकीओरअग्रसरहोताआरहाहैऔरमानवनेएक घुमक्कड़हिंसकजीवनसेएकसभ्यएवंस्थिरजीवनकीस्थापनाकीहै।इसप्रकारगांधीजीनेइतिहासकीअहिंसात्मक व्याख्याप्रस्तुतकीहै।

मार्क्सकेद्वन्द्वात्मकभौतिकवादसिद्धान्तकेअनुसारभौतिकजगतकाविकासहोताहै।यहविकासएक सीधीरेखामेंनहींबल्किएकटेढ़ी–मेढ़ीप्रक्रिया है और इसकेगुणोंमेंपरिवर्तनहोनाआकस्मिकहै।मार्क्सकेउक्तविचारों

मेंगांधीजीकोआंशिकहीसत्यदिखाईदेताहै ।वेमार्क्सकीहीभांतिजीवनकोईकाईमानतेहैं ।गुणात्मकपरिवर्तनों कोभीआकस्मिकमानतेहैं ।फिरभीवेइतिहासपरइसनियमकोलागूकरनेमेंमार्क्ससेअसहमतहै ।वेसामाजिक रूपान्तरणकीकुंजीमनुष्यकेव्यक्तित्व,उसकीक्षमताऔरआत्माकेउन्यननमेंमानतेहैं ।गांधीजीकेअनुसारमनुष्यअपना भविष्यनिर्मातास्वयंहै ।इस प्रकारगांधीवादीदर्शनआदर्शवादीहैऔरवह मार्क्सकेभौतिकवादीदर्शन को इसीलिए अस्वीकारकरताहैकिमानवीयचेतनाकोउसीप्रकारसेनहींसमझाजासकताजिसप्रकारसेपदार्थकोसमझाजासकता है ।[4]

मार्क्सकेअनुसारअबतककासमाजवर्गसंघर्षकाइतिहासहै ।प्रत्येकसमाजदोभागोंमेंविभाजितहै—शोषक

एवंशोषित ।इनवर्गोंकेमध्यप्रतिद्वन्द्विताहोतीहैजोबढ़ते—बढ़ेवर्गसंघर्षमेंपरिवर्तितहोतीहै ।मानवजातिकाविकास तभीहोगाजबवर्गविहीनसमाजकीस्थापनाहोगी ।मार्क्सकेवर्गसंघर्षकेतीनआधारहैं[5]—

1. वर्गोंकाअस्तित्वकेवलउत्पादनकेविकासकीअनिवार्यऐतिहासिकअवस्थाओंसेआबद्धहै ।
2. वर्गसंघर्षअनिवार्यतःसर्वहाराकीअधिनायकत्वकीओरअग्रसरकरताहै ।
3. अधिनायकत्ववर्गोंकेउन्मूलनऔरवर्गहीनसमाजकेलिएसंक्रमणमात्रहै ।

मार्क्सकाउक्तवर्गसंघर्षकासिद्धान्तएकसार्वभौमदृष्टिकोणहैजोहरसमयसमाजकोरूपांतरणकीओर अग्रसरकरताहै ।इसमेंमानवजातिकाउद्धारतभीसम्भवहैजबकोईभीवर्गनाहो ।इसकेलिएवेश्रमिकवर्गमेंवर्ग चेतनापरबलदेतेहैं ।

दूसरीतरफगांधीजीसमस्तमानवजातिकेसामान्यहितऔरसामंजस्यपरबलदेतेहैं ।वर्गसंघर्षकीआलोचना करतेहुएगांधीजीनेस्वयंलिखाहै''मैंऐसीकल्पनाकोपसंदनहींकरताजोयहप्रकटकरतीहैकिवर्गोंऔरजनसमूह याश्रमिकवपूंजीपतिकेमध्यअनिवार्यप्रतिद्वन्द्वताहै,जिससेवेपारस्परिकहितकेलिएकार्यनहींकरसकेंगे ।यदिऐसा हीहुआहोतातोइसस्तरपरमानवजातिकाउत्कर्षनहींहुआहोता ।''[6]जयप्रकाशनारायणजीनेमार्क्सवादऔरगांधीवादमेंअन्तरइनशब्दोंकेआधारपरकियाहैकिमार्क्सवादएकवर्गकोदूसरेवर्गपरविजयीबनाकरवर्गोंकोनष्ट करनाचाहताहैजबकिगांधीवादवर्गोंमेंएकतास्थापितकरकेउनकाउन्मूलनकरनाचाहतेहैंजिससेवर्गभेदनरहे ।[7] इसप्रकारगांधीवादीवर्गोंमेंभेदकेस्थानपरवर्गोंमेंसुधारकरनाचाहतेहैं ।उनकाउद्देश्यबलपूर्वकपूंजीपतियोंकीसम्पत्ति काहरणनकरकेसम्पूर्णजनसमुदायकेहितोंमेंसम्पत्तिकासदुपयोगकरनाहै ।यहआदर्शसामूहिकनैतिकक्रान्तिद्वारा हीसम्भवहोसकताहै ।गांधीजीकीइसव्यवस्थाकाउद्देश्यभीसामाजिकसमानताऔरआर्थिकसमानताहै ।मार्क्स औरगांधीदोनोंकाउद्देश्यसमानतालानाहैपरन्तुइसउद्देश्यकीपूर्तिकेलिएअपनाएगएसाधनोंमेंमुख्यअन्तरहै ।मार्क्स सामाजिकपरिवर्तनकेलिएहिंसात्मकसाधनोंपरजोरदेतेहैंजबकिगांधीप्रेमवअहिंसाकेसाधनोंपरबलदेतेहैं ।वे सत्याग्रहकोअपनाप्रमुखअस्त्रमानतेहैं ।[8]

मार्क्सअपनेआदर्शसमाजकेलक्ष्यतकशीघ्रपहुंचनेकेलिएहिंसातथादमनकारीसाधनोंकोआवश्यकमानते हैं ।उनकाविश्वासहैकिसाधनकीसाध्यकीऔचत्यिताकोसिद्धकरताहै ।वेघोषणाकरतेहैंकिउनकेलक्ष्यकीप्राप्ति सम्पूर्णविद्यमानसामाजिकव्यवस्थाकीसमाप्तिसेहीसम्भवहै ।साम्यवादीघोषणापत्रमेंहिंसाकोआवश्यकबतातेहुए उन्होंनेकहाकिसाम्यवादीअपनेदृष्टिकोणोंवउद्देश्योंकोछिपानेसेघृणाकरतेहैं ।वेस्पष्टरूपसेघोषणाकरतेहैंकि समस्तवर्तमानसामाजिकव्यवस्था को उखाड़ फैंकनेसेहीउनकेलक्ष्यकी सिद्धिहोसकतीहै ।शासकीयवर्गोंको साम्यवादीक्रान्तिपरभयाकुलहोनेदो ।सर्वहारावर्गकेपासअपनीबेड़ियोंकेअतिरिक्तखोनेकेलिएकुछभीनहींहै । उनकेसम्मुखविजयकेलिएसमूचाविश्वहै ।विश्वकेश्रमिकोंएकहोजाओ ।

दूसरीतरफमहात्मागांधी साध्यवसाधनमेंघनिष्ठसम्बन्धमानतेहैं ।वेसाधनकीउपमा बीजसेतथा साध्यकीउपमावृक्षसेकरतेहुएकहतेहैंकिसाधनऔरसाध्यकेमध्यवैसेहीअटूटसम्बन्धहैजैसेबीजववृक्षकेमध्य,हमबिल्कुलवहीकाटतेहैंजोबोतेहैं ।[9]उनकेअनुसारबुरेसाधनोंद्वाराअच्छेसाध्यकीप्राप्तिनहींहोसकती,शोषण औरउत्पीड़नसेमुक्तअहिंसात्मकसमाजजैसेसाध्यकीप्राप्तिकेलिएसाधनभीअहिंसात्मकहोनेचाहिए ।वे हिंसाके प्रयोगकीआलोचनाकरतेहैंक्योंकिइनसेचिरस्थाईपरिणामोंकीप्राप्तिनहींहोसकती ।उनकीअहिंसात्मकपद्धतिके अनेकरूपहैं,सविनयअवज्ञा,अहिंसा,असहयोग,सामाजिकबहिष्कार,उपवासयाअनशन,हड़तालऔरधरनाआदि परिस्थितियोंकेअनुसारइनमेंएकयाअनेककाप्रयोगकियाजासकताहै ।इसशस्त्रकाप्रयोगराजनीतिकअनाचारके विरूद्धहीनहींअपितुआर्थिकसामाजिकवधार्मिकअन्यायकेविरूद्धभीकियाजासकताहै ।

मार्क्सधर्मकोजनताकेलिएअफीममानतेहैंऔरयहीउक्तिउसकेसम्पूर्णदृष्टिकोणकीआधारशिलाहै ।[10]उन्होंने सभीधर्मों,मठोंऔरधार्मिकसंस्थाओंकोमध्यवर्गीयप्रतिक्रियाकाउपकरणमानाजोशोषणकासमर्थनतथाश्रमिकवर्ग केलिएबेहोशीकाकामकरतीहै ।उनकेअनुसारकिसीनैतिकऔरआचारविषयकसंहिताकेअस्तित्वकेसाथधर्मसदैव

परिवर्तनमेंबाधाउपस्थितकरनेकाकार्यकरताहैतथाशासकवर्गकीविशेषस्थितिबनाएरखनाचाहताहै ।इसप्रकार मार्क्सधर्मकोअध्यात्मिकदमनऔरशोषितवर्गकीवैचारिकदासताकाएकउपकरणमानतेहैं ।[11]उनकेअनुसारधर्मका

उदयउसयुगमेंहुआजबमनुष्यकोब्रह्माण्डकीकार्यप्रणालीकाबहुतकमज्ञानथाऔरप्राकृतिकविषमताओंकोदैविक शक्तिसमझनाउनकेलिएसन्तोषजनकनिराकरणथा ।अतःधर्मकोवेप्रकृतिकेसम्बन्धमेंभ्रान्तिपूर्णआदिमधारणाओं सेमानतेहैं ।[12]मार्क्सनेईश्वरकेअस्तित्वकोभीअस्वीकारकियाहै ।वहनैतिकसिद्धान्तकोभीअन्यसंस्थाओंकीभांति समाजकेआर्थिकढांचेतथाउत्पादनकीअवस्थाओंकापरिणाममानतेहैं ।यहनैतिकतासमाजकेप्रमुखवर्गकेहितों कोस्पष्टकरतीहैजिससेवह'वर्गीयनैतिकता'कहतेहैं ।[13]

दूसरीओरगांधीजीधर्मकोनैतिकताकाआधारमानतेहैं ।उनकेअनुसारजबनैतिकताएकजीवितप्राणीके रूपमेंस्वयंअवतरितहोतीहैतोवहधर्मबनजातीहै,क्योंकिवहीउसेअनुशासितकरतीहै ।उनकेअनुसारआत्मज्ञान ईश्वरकासाक्षात्कारऔरउसमेंनिवासकरनासभीधर्मोंकालक्ष्यरहाहैऔरउन्हींलक्ष्योंकेलिएवेस्वयंक्रियाशीलहै । गांधीजीकेधर्मकामूलआधारईश्वरकेप्रतिदृढ़आस्थाहै ।गांधीजीविश्वकेधर्मोंमेंपायेजानेवालेसमाननैतिक मूल्योंकेआधारपरएकताकाप्रतिपादनकरतेहैं ।उनकेशब्दोंमें''मैंविश्वकेसभीमहान्धर्मोंकीआधारभूतसत्यतामें विश्वासकरताहूँ ।मुझेविश्वासहैकिवेसभीईश्वरप्रदतहैंऔरवेउनलोगोंकेलिएबहुतहीआवश्यकहैंजिनकेलिए इनधर्मोंकाउद्घाटनहुआहै ।''[14]उनकाधर्मएकसंकुचितसाम्प्रदायिकनहोकरएकऐसामानवधर्महैजोसम्पूर्णविश्व कीसामूहिकआस्थाकाअधिकारीहोसकताहै ।इसलिएवेधर्मपरिवर्तनकोभीआवश्यकनहींसमझते,अपितुचाहतेहैं किमनुष्यअपनेनिजीधर्ममेंप्रतिष्ठितनैतिकताकेमूलसिद्धान्तोंकेअनुसारहीकार्यकरें ।

मार्क्सकेआर्थिकआदर्शोंमेंपूंजीवादीव्यवस्थाकीसमाप्ति!उत्पादनकेसाधनोंपरसर्वहारकानियन्त्रण!एक केन्द्रितसुनियोजितअर्थव्यवस्थाकीस्थापनाकाउद्देश्यहै,ताकिपूंजीपरएकविशेषवर्गकानियन्त्रणनरहेऔरसम्पूर्ण समाजकेहितमेंपूंजीकाप्रयोगकियाजासके ।

दूसरीतरफ,गांधीजीकाउद्देश्यभीआर्थिकसमानताहै,जिसमेंधनीऔरनिर्धन,पूंजीऔरश्रमकेमध्यअन्तर कोदूर किया जासके ।परन्तुइसकीप्राप्ति केलिए गांधीऔरमार्क्सकी विधियोंमेंअन्तरहै । मार्क्सकीविधियोंमें पूंजीपतियोंकासशस्त्रक्रान्तिद्वाराअन्तकरनाहै,जबकिगांधीजीअपनेन्यासितासिद्धान्तकेद्वारापूंजीपतियोंकोअपनी सम्पत्तिकाअधिकारबनाएरहनेदेनाचाहतेहैं,ताकिवहसमाजकेहितमेंउससम्पत्तिकेन्यासधारीकेरूपमेंप्रयोग करें ।भूमिवउत्पादनकेदूसरेसाधनोंपरवेमार्क्सकीभांतिराज्यकेस्वामित्वपरहीबलदेतेहैं ।परन्तुराज्यकास्वामित्व वेबड़ेउद्योगोंतकहीसीमितकरतेहैं ।इसप्रकारवेपूंजीपतिराज्यकेखतरेकोसमझतेहैंऔरइसीकारणउन्होंनेछोटे उद्योगोंकेविकेन्द्रीकरणपरबलदिया ।गांधीजीव्यक्तिगतसम्पत्तिकेभीवेविरूद्धथेपरन्तुमार्क्सकीभांतिउन्होंनेकोई सामान्यनियमनहींबनाए ।[15]

अन्तमेंदोनोंविचारधाराओंकाविश्लेषणकरनेसेपताचलताहैकिगांधीजीमार्क्सकीभांतिसिद्धान्तकरनहोकर एकव्यवहारिकआदर्शवादीतथाअन्तःकरणसेनितान्तधार्मिकव्यक्तिथे ।समाजवादउन्हेंभीप्रियथा!वेअहिंसात्मक समाजवादमेंविश्वासरखतेथे ।उन्होंनेकहाभीहैकिसमाजवादबिनाहिंसाकेआयेतोउसकास्वागतहोगा ।

सन्दर्भसूची

1. दण्डवते,मधु,मार्क्सऔरगांधी,पापुलरप्रकाशन,बम्बई,1977,पृ०57
2. गांधीमदनगोपाल,गांधीऔरमार्क्स,मंथनपब्लिकेशन,रोहतक1982,पृ०58
3. वही,पृ०59
4. दण्डवते,मधु,मार्क्सऔरगांधी,पापुलरप्रकाशन,बम्बई,1977,पृ०85
5. गांधीमदनगोपाल,गांधीऔरमार्क्स,मंथनपब्लिकेशन,रोहतक1982,पृ०64
6. वही,पृ०65
7. नारायण,जे०पी०,सोशलिज्मसोशलिस्टपार्टी,पापुलरप्रकाशन,बम्बई,1975,पृ०167
8. गांधीमदनगोपाल,गांधीऔरमार्क्स,मंथनपब्लिकेशन,रोहतक1982,पृ०65
9. वही,पृ०18
10. मधुलिमये,मार्क्सवादवगांधीवाद,पल्वनप्रकाशन,दिल्ली,1981,पृ०36
11. गांधीमदनगोपाल,पूर्वोद्धृत,पृ०76
12. वही,पृ०75
13. वही,पृ०81
14. मधुलिमये,मार्क्सवादवगांधीवाद,पल्वनप्रकाशन,दिल्ली,1981,पृ०74
15. आचार्यनरेन्द्रदेव,समाजवादीलक्ष्यतथासाधन,काशीविद्यापीठ,1947,पृ०54